ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

मोहन राकेश जी- जीवन एवं रचना कर्म

Dr. Amrish Makwana

M.A., B.Ed, Ph.D. working as Assistant District Co-coordinator, Planning & Monitoring, Samagra Shiksha Abhiyan, District Panchayat, Anand

प्रस्तावनाः-

मोहन राकेश हिन्दी साहित्य के उन चुनिंदा साहित्यकारों में हैं जिन्हें 'नयी कहानी आंदोलन' का नायक माना जाता है और साहित्य जगत में अधिकांश लोग उन्हें उस दौर का महानायक कहते हैं। उन्होंने 'अषाढ का एक दिन' के रूप में हिन्दी का पहला आधुनिक नाटक भी लिखा। आधुनिक नाटक साहित्य को नयी दिशा की ओर मोड़ने वाले मोहन राकेश प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार हैं। हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार एवं निबंधकार मोहन राकेश का असली नाम मदनमोहन गुगलानी था। मोहन राकेश का जन्म 8 जनवरी 1925 ई. को पंजाब के अमृतसर शहर में हुआ था। इनके पिताजी करमचन्द गुगलानी अधिवक्ता होते हुए भी साहित्य और संगीत के प्रेमी थे, जिसका प्रभाव मोहन राकेश के जीवन पर पड़ा।

Key Words: *साहित्यकारों, हिन्दी साहित्य, निबंधकार, प्रसिद्ध, नाटककार* ।

परिचयः

राकेश जी की माता जिन्हें राकेश अम्मा कहते थे। जिनका नाम था बचन। पति की मृत्यु के बाद बड़े से बड़े दुःख का उन्होंने अविचल धैर्य से सामना किया। माँ की सरलता, उदारता और दयालुता ने उनको मानवतावादी इन्सान बना दिया। माँ के व्यक्तित्व से राकेश जी विशेष प्रभावित रहे। माँ से उन्हें अपनत्व, ममत्व, अमर्यादित प्यार और अनोखा विश्वास मिला। राकेश की माँ एक आधारस्तंभ ही थी, जिससे उन्हें सांत्वना, सुरक्षा एवं दिक्षा मिलती रही। 'आर्द्रा' कहानी से अम्मा

को सामने रखकर ही राकेश जी ने टूटते संबंधों को जोड़ने की कोशिश करनेवाली माँ के दिल की तडपन को चित्रित किया है।

राकेश जी के परिवार में माता-पिता के अलावा एक बड़ी बहन और एक छोटा भाई वीरेन था।

राकेशने लाहौर ओरियण्टल कॉलेज से शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद हिन्दी और संस्कृत विषयों में एम.ए. किया। शिक्षा समाप्ति के अंतर उन्होंने अध्यापन का कार्य किया। उन्होंने मुंबई, शिमला, जालन्धर तथा दिल्ली विश्वविध्यालय में अध्यापन किया परंतु अध्यापन में विशेष रुचि न होने के कारण उन्होंने सन् 1962-63 ई में मासिक पत्रिका 'सारिका' के सम्पादन का कार्यभार संभाला। कुछ समय पश्चात् इस कार्य को भी छोड़कर उन्होंने स्वतंत्र लेखन का कार्य प्रारंभ किया। सन् 1963 से 1972 ई. तक जीवनभर स्वतंत्र लेखन ही उनकी आजीविका का आधार रहा। 'नाटक की भाषा' पर कार्य करने के लिए उन्हें नेहरू फैलोशिप भी प्रदान की गयी, लेकिन असामायिक मृत्यु होने के कारण इस कार्य में व्यवधान पड़ गया। असमय ही 3 दिसम्बर 1972 ई. में दिल्ली में उनका निधन हो गया।

शिक्षा एवं व्यवसायः-

राकेश जी ने जीवन में कई विषम परिस्थितियों का भी सामना किया। बचपन आर्थिक तंगी में गुजरा। राकेश के मन पर पिता की मृत्यु के अलावा बँटवारे का भी गहरा प्रभाव पड़ा। वे उस समय अमृतसर में ही थे, जिसने विभाजन की त्रासदी सबसे अधिक भुगती और वे उनके साहित्य में जगह-जगह दिखाई देती है। इसके बाद उनका परिवार जालंधर में बस गया जहाँ उनके लेखन को गति मिली।

राकेश जी की प्रारंभिक शिक्षा अमृतसर में हुई। लाहौर से उन्होंने मात्र 16 साल की उम्र में 'शास्त्री' की उपाधि हाँसिल की, फिर अंग्रेजी में बी.ए. पास की। राकेश ने शिक्षा विषम परिस्थितियों में ग्रहण की। बहन स्कूल में काम करके घर चलाती थी और राकेश जी ट्यूशन से अपना खर्च निकालते थे। यदि उस समय कॉलेज के

प्रिंसीपल स्व. लक्ष्मण स्वरूप उनकी सहायता न करते तो वह बोरिया-बिस्तर बांधकर घर लौट आते।

संस्कृत में एम.ए. के बाद मदन गुगलानी ने सबसे पहले फिल्मों के लिए कहानी लिखने का काम हाथ में लिया। मगर यह काम उनकी कार्य पद्धति के अनुकूल नहीं था। इसके बाद उन्होंने 1947 में बम्बई विश्वविद्यालय के सिडनहम कॉलेज ओफ़ कोमर्स, बम्बई में लैक्चररशिप जोईन की, लेकिन आँखों की कमजोरी होने के कारण उन्हें नौकरी छोड़नी पड़ी। इसके बाद जालंधर में डीएबी कॉलेज में बतौर प्राध्यापक जोईन किया, लेकिन वहाँ से भी नौकरी कुछ कारणों से छोड़नी पड़ी। अपने इस अनुभव को उन्होंने 'लड़ाई' नामक कहानी में पाठकों के साथ साझा किया है। इसके बाद उन्होंने शिमला, जालंधर, और 1960 में दिल्ली विश्वविद्यालय में लैक्चररशिप ले ली, लेकिन उसे भी शीघ्र छोड़ दिया। क्योंकि उन्हें किसी भी तरह का बंधन मंजूर नहीं था, चाहे वो परिवार का हो या नौकरी का।

वैवाहिक जीवनः-

राकेश जी का पहला विवाह सन् 1950 में हुआ। राकेश जी का विचार था कि पत्नी घर सँभालेगी और वे लेखन कार्य पर निर्भर रहने का प्रयास करेंगे। अतः उन्होंने सुशीला से विवाह करने की सोची जो आगरा के दयालबाग में ट्रैनिंग कॉलेज की अध्यापिका थी। राकेश जी के सब खयाल सपना बनकर रह गये, क्योंकि राकेश जी का प्राविडेंट फंड खत्म होने तक पत्नी ने उनका साथ दिया और उसके खत्म होते ही इस संबंध में अन्यमनस्क हो गई। जिससे राकेश को गहरी चोट पहुँची। इस तरह कई विडंबनाओं के बीच उनका वैवाहिक जीवन ज्यादा नहीं चल सका और विवाह विच्छेद हो गया।

दूसरा विवाह राकेश जी ने अपने घनिष्ठ मित्र की बहन पुष्पा के साथ 9 मई, 1960 में किया मगर दूसरी पत्नी मानसिक रूप से लगभग विक्षिप्त थी। पुष्पा के

साथ भी वैवाहिक जीवन रास न आया। 'अंधेरे बंद कमरे' इस मनः स्थिति में लिखा गया उपन्यास है।

तीसरा विवाह जो अनिता जी के साथ राकेश जी ने किया जिसे तीसरा विवाह नहीं मगर पहला प्यार कह सकते हैं। क्योंकि वैधानिक ढंग से राकेश जी ने उनके साथ विवाह नहीं किया था। राकेश जी को अनीता जी से ही 'घर' नाम की वस्तु मिली।

सृजनशीलताः-

राकेश जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, ध्वनि नाटक, बीज नाटक एवं रंगमंच के क्षेत्र में उनका नाम अग्रणी लेखकों में शुमार है। उन्होंने अपने जीवन में लेखन को ही सर्वोपरी रखा। राकेश जी अपने लेखन का प्रेरणास्रोत पिता को मानते है। घर का माहौल साहित्यिक होने के कारण ही वह साहित्य की और अग्रसर हुए। उन्होंने 1962 में 'सारिका' के बतौर संपादक नए क्षेत्र में कदम रखा लेकिन सालभर में भी उन्होंने इस नौकरी को भी छोड़ दिया।

कहानीकार, नाटककार और उपन्यासकार के रूप में तो प्रायः लोग मोहन राकेश से परिचित है, परंतु इस व्यक्ति के कवि के रूप को शायद बहुत कम लोग जानते है हालांकि उनके नाटक 'अषाढ का एक दिन' को पढ़ते हुए उसका यह रूप किसी भी गंभीर पाठक की दृष्टि से बचा नहीं रह सकता है।

राकेश जी के तीन कमिटमेंट्सः-

राकेश जी अपनी तीसरी पत्नी अनीता जी से हमेशा कहा करते थे- "जिंदगी में पहले नंबर पर मेरे लिए लेखन है, दूसरे नंबर पर मेरे दोस्त और तीसरे नंबर पर तुम, लेकिन तीनों ही मेरे लिए आवश्यक है।"

उपसंहारः-

राकेश जी एक जिन्दादिली व्यक्ति थे। उन्हे जीने का शौक था। वह हर हाल में खुश रहा करते थे। राकेश सदैव सिर उठाकर जीये, आत्मसम्मान से जीये। राकेश को बंधन प्रिय नहीं थे, पुराने जर्जर मूल्यों को ढोते जाना उन्हें कभी सहन नहीं

था। अपने विद्रोही स्वभाव और स्वच्छंद मनोभावों के कारण राकेश को काफी हानि उठानी पड़ी, दुश्मनी तक मोल लेनी पड़ी। टाइम्स ऑफ इंडिया, 'सारिका' और ऐसे ही कितने पदों को उन्होंने इसीलिए ठुकरा दिया था क्योंकि इस सबसे उनकी स्वच्छंदता आहत होती थी।

मानवीय दुर्बलताओं से परिचित और पारिवारिक बिखराव व तनाव को झेलते हुए राकेश जी को न केवल उनके उपन्यासों एवं नाटकों में देखा जा सकता है, उसे उनकी 'एक और जिंदगी' जैसी कहानियों में भी देखा जा सकता है। राकेश का व्यक्तित्व उनके साहित्य में झलकता है। उनके पात्रों के चहरों पर सदैव एक अंतर्मुख भाव रहा है। वस्तुतः राकेश जी का साहित्य उनके व्यक्तित्व का ही एक रूप है। राकेश जी के चेहरे के भाव, दृष्टिभंगिमा, कुछेक कहानियों में उनके ठहाके और उनकी जीवन दृष्टि पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है।

संदर्भ सूचिः-

i. हिन्दी कहानीः उद्भव और विकास, डॉ. सुरेश सिन्हा, पृष्ठः 581
ii. कहानीकार मोहन राकेश, डॉ. सुषमा अग्रवाल, पृष्ठः 111-112
iii. वारिस, मोहन राकेश, पृष्ठः 32
iv. वही, पृष्ठः 233
v. वही, पृष्ठः 163
vi. हिन्दी उपन्यास, डॉ. सुरेश सिन्हा, पृष्ठः 352
vii. वही, पृष्ठः 355
viii. मोहन राकेश की कृतियों में स्त्री-पुरुष संबंध, मिथिलेश गुप्ता, पृष्ठः 141